Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 10 | July. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

'बकरी'–नाटक में अभिव्यक्त व्यंग्य और प्रतीक

प्रा. डॉ. किशोर पवार
क. भा. पा. महाविद्यालय पंढरपुर.जि. सोलापुर.

प्रस्तावना :

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे सामाजिक विसंगतियों और अमानवीय प्रणालियों का पर्दाफाश करते हैं।

सर्वेश्वर जी का जन्म 15 सितंबर 1927 को बस्ती जिले के पिकौरा गॉव में हुआ। उनके पिता बिश्वेश्वर और माता सौभाग्यवती दोनों अध्यापक थे। सर्वेश्वर जी 1946 में बी.ए. और 1949 में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. उत्तीर्ण हुए । वे आकाशवाणी में अनुवादक, निर्माता, पत्रिका के संपादक के आदि काम करते रहे। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक और यात्रा संस्मरण लिखे हैं। वे कवि के रूप में 'तीसरा सप्तक' में आए और नए कवि के रूप में परिचित हुए ।

नाटक यह सर्वेश्वर जी की प्रिय विधा रही । उन्होंने बकरी, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ, हवालात, हिसाब–किताब, कल भात आएगा, हाथी की पौ, अनाप–शनाप, भौं–भौं–खों–खों, लाख की नाक आदि नाटक लिखे। आकाशवाणी के लिए–पीली पत्तियॉ, चॉदी का वर्क, दो चीनी औरतें, यहॉ हम एक हैं, बर्कने कहा, राजकीय सूक्ष्म यंत्रशाला, धनिया, रामकृष्ण परमहंस, पॉच मिनट का नाटक, वे क्या सोचते हैं आदि रेडियो नाटक लिखे। होरी धूम मचो री, रूपमति बाजबहादूर, सावन घन आए, रक्षाबंधन आदि सर्वेश्वर जी के नृतनाटय हैं। उन्होंने बुध्द की करुणा, सत्यवादी गोखले नामक दो एकांकी भी लिखे हैं।

'बकरी' यह नाटक सर्वेश्वर जी का प्रसिध्द नाटक है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्ट और शोषक राजनीति को प्रस्तुत करने वाली यह रचना हिंदी साहित्य और जनमानस में चर्चा के केंद्र में रही है। 'बकरी' नाटक कुल 58 पृष्ठों और दो अंकों में विभाजित है। इसके प्रस्तुतिकरण में नाटककार ने नुक्कड़ नाटक और लोकनाटय् का समन्वय किया है।

'बकरी' नाटक का वातावरण : 'बकरी' सन 1974 का नाटक है। इसमें स्वार्थी और भ्रष्ट राजनीति को लक्ष्य किया है। साधारण जन का शोषण अंग्रेजों द्वारा हुआ था; तो स्वतंत्र भारत में भी शोषण निरंतर रहा। स्वतंत्रता के बाद गुंडे, दुर्जन, क्रोधी, निर्दयी, शोषक आदि अराजक तत्व राजनीति में आए । जिन्होंने राजनीति को एक व्यवसाय बनाया। गांधी जी के विचारों को ढाल बनाकर स्वरक्षण और स्वपोषण किया। दूसरी ओर साधारण जनता अशिक्षा, अज्ञान, अविकास, अन्याय, अत्याचार और आड़ंबर से पीडी जाती रही। सरकार द्वारा गोपनीय नीति के साथ दबाने, झुकाने पीडने की भी नीति अपनाई गई। जिससे सरकारी आदमी, सरकारी विचार, सरकारी नीति आदि से जनता भयभीत होने लगी। 'बकरी' नाटक का सृजन काल कॉग्रेस दल और इंदिरा गांधी की इसी भयानक वास्तव स्थिति का कालखंड है। देश की जनता आजादी के

पच्चीस साल बाद भी आजाद नहीं थी। उस देश का परिचय भी नहीं था। न्याय पीटा जाता था, विद्रोह कुचला जाता था। इस भयानक परिवेश और उसकी पीड़ा को, देश के अंधा–धुंद, अन्यायग्रस्त आजाद देश के गुलाम, हुकूमशाही वातावरण को प्रस्तुत नाटक दिखाता है।

'बकरी' नाटक का व्यंग्य : वास्तव में 'बकरी' यह एक यथार्थ, सामाजिक, राजनीतिक नाटक है। इसमें मुख्यतः व्यवस्था की और जनता की अवस्था दिखाई है। 'बकरी' नाटक में कहीं–कहीं अनायास व्यंग्य हुआ है। यह व्यंग्य ग्रामीण जनता की स्थिति पर हुआ है। जिसके माध्यम से नाटककार जन–आंदोलन और जनक्रांति के रूप में परिवर्तन की भूमिका रखते हैं। 'बकरी' नाटक में व्यक्त व्यंग्य इस प्रकार है –

ग्रामीण जनता का अज्ञान – ग्रामीण जन अपने देश की संकल्पना, स्थिति और गति से कोसों दूर हैं। विपती का संवाद इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, "हम देश में नहीं रहित हुजूर, गॉव में रहित है।"[1] ग्रामीण जन गांधी जी की विचारधारा से, स्वातंत्र्य से, देश से, राजनीति से और गांधी जी की बकरी से अपरिचित हैं। इसी जन–अज्ञान का लाभ चालाक राजनेता उठाते हैं, जिससे देश की जनता शोषण का शिकार बनती है। 'नहीं, बुध्दि, बहादुरी और विवेक। यह गांधी जी की बकरी है।'[2] इस स्थिति से उबारने के लिए उसे शोषण, शोषक से परिचित कराना आवश्यक है। यहॉ नाटककार ने ग्रामीणजन के अज्ञान को व्यंग्य से लक्ष्य किया है।

जनता की हारी मनोवृत्ति – लाखों की संख्या वाली जनता पर गिने–चुने लोग शासन करते हैं। यह शासक की धूर्तता, अन्याय, अत्याचार आदि से संभव होता है इसके साथ ही साधारण जन की हारी मनोवृत्ति भी उतनी ही उत्तरदायी है।'पवित्र विचार है। जनसेवौ। चुनाव जिताना। फिर मंत्री बनवाना सब बकरी करवाएगी।'[3] स्वीकार का भाव और मनोवृत्ति दिखाकर नट और युवक आदि पात्रों के माध्यम से नाटककार इसपर प्रहार करते हैं।

बकरी भाव और व्यंग्य : जनसमूह संख्या में विशाल होता है। परंतु सोच–विचार में न के बराबर होता है। गणतंत्र में जनता राजा होने पर भी मात्र भोगी प्रजा ही बनाई जाती है। क्योंकि वह सहनशील और स्वीकारशील है। चाणाक्ष नेतृत्व जनता में बकरी की म्यॉ ऽऽ म्यॉ ऽऽ भर देता है। इससे बचने–उबरने के लिए गांधीवाद, समाजवाद आदि के ढकोसले को तोड़कर फेंकना आवश्यक है। इसलिए बकरीवाद को, बकरी भाव को मिटाना आवश्यक है। इस प्रकार 'बकरी' नाटक में जनता की हारी मनोवृत्ति और अविरोध की मानसिकता पर व्यंग्य है।

'बकरी' नाटक के शीर्षक की सार्थकता : 'बकरी' नाटक स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक विसंगति और जनवास्तव को लेकर लिखा है। नाटक में कुछ प्रतीक सहज और उपयुक्त बनकर आए हैं। वे इस प्रकार हैं–

सहनशील और निरीह जनता का प्रतीक : बकरी सहनशील होती है। उससे दूध लिया जा सकता है। बदले में उसकी देखभाल, आरोग्य और संरक्षण की आवश्यकता अनिवार्य नहीं होती। बकरी के लिए घास लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वह अपने लिए घास खुद ढूँढती है। वह एक निरीह प्राणी और बेजुबान होने से अपनी शारीरिक, मानसिक व्यथा को व्यक्त कर नहीं पाती। अपनी आरोग्यविषयक समस्या को नहीं रख पाती। बिल्कुल ऐसी ही स्थिति निरीह, सहनशील जनता की होती है। उससे वोट और दान लिया, छीना जाता है। उसके विकास और समस्या को अनदेखा किया जाता है। जनता का अस्वास्थ्य रखना नेताओं की राजनीतिक आवश्यकता होती है। बकरी और जनता की स्थिति कई स्तर पर समान है। इसलिए नाटक में बकरी का प्रतीक रूप में उपयोग सार्थक है।

मूक, असहाय, शोषित जनता का प्रतीक : जनता एक भीड़ होती है, जिसका कोई चेहरा नहीं होता। जनता में कार्यशक्ति होने पर भी उसमें संगठन नहीं होता सत्ता के समक्ष वह मूक और असहाय बनी रहती है। परिणामतः जनशोषण निरंतर रहता है। यहॉ भी जनता पर बकरी सार्थ प्रतीत होती है।

गांधी विचारों का विपरित और आधुनिक प्रतीक : गांधीवाद में जनता का सार्वभौम महत्व है। उसी के लिए विकास की नीतियॉ और निधि हैं। 'स्वराज्य', 'गॉव की ओर चलो', 'भारत गॉव मे रहता है' आदि गांधी की उक्तियॉ गांधीवाद के जनप्रधान विचारों के मूल हैं। परंतु वर्तमान में हर कोई अपने स्वार्थ के लिए गांधीवाद आदि की प्रशंसा करता है। वास्तव में करनी और कथनी की विसंगति लेकर चलता है। 'बकरी' नाटक में गांधी जी के सिध्दांतो का दुरुपयोग बतलाया है। इस प्रकार आज भी गांधी जी की बकरी गावों में इस्तेमाल की जाती है। ग्रामीण जनता को आज गांधीवादी सिध्दांतों के जामे दिखाकर नेतागण वोट प्राप्त करते है, और फिर कुर्सी। गांधी के नाम पर आज भी जनता लुट रही है। सर्वेश्वर ने 'बकरी' के माध्यम से आम आदमी की शोषण कथा को बडे साहस के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'बकरी' गरीब जनता का प्रतीक है।'[4] गांधीवाद की यह विड़ंबना, यह उपहास और गलत प्रयोग देश और जनता के लिए अहितकर है।

प्राकृतिक ढंग से जीवनयापन और विकास को महत्व देने वाले गांधी जी ने ग्रामीण साधनों को महत्व और अग्रक्रम दिया, जिनमें से एक है–बकरी। इस पर ग्राम जीवन चलता है। परंतु वर्तमान में उसके विसंगत अर्थ लगाए गए । गॉव की बकरी अब जनता को बना डाला। उसी से अपने सुख–संपन्न जीवन का आधार बनाया गया। इस प्रकार गांधीवादी के विपरित उपयोग पर नाटककार ने व्यंग्य किया है।

संदर्भ

1) नाटक–'बकरी' – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना–पृ.31.
2) नाटक–'बकरी' – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना–पृ.25.
3) नाटक–'बकरी' – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना–पृ.47.
4) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य – डॉ. कल्पना आग्रवाल पृ.198.